हस्तरेखा पढ़ने वाली: अगली कड़ी

Gillette Audio — नंदो द स्क्राइब — gillettenarrative.com

बोस्टन में बानवे साल की उस पुर्तगाली हस्तरेखा पढ़ने वाली से कुछ दिन पहले हुई मुलाक़ात ने मेरे मौन के भीतर एक हैरानी और एक सुखद स्मृति छोड़ दी थी, साथ में एक मुस्कान जो कहती कुछ नहीं थी पर सोचती हमेशा वही एक बात थी: और अब क्या होगा जो मैंने पहले से भाँप न रखा हो?

गूढ़ विद्या, पाइथागोरस और उसकी ज्यामिति के भीतर, पिछले तैंतीस बरसों से मेरी सांस्कृतिक बुनियाद रही थी। जादू से, सफ़ेद हो या काला, मैं सचमुच कभी नहीं मिला — मैंने उसे व्यंग्य में, नेक मक़सदों के लिए, सिर्फ़ राशिफल और राशियाँ पढ़ने में बरता था। हर सुबह अख़बारों के वे छोटे-छोटे कॉलम पढ़ने में कुछ नहीं लगता था, और उनकी उपयोगिता का निशाना मैंने सिर्फ़ एक चीज़ पर साधा था: सुंदर, नामुमकिन औरतों को जीतना — वे औरतें जो कहती थीं कि उन्हें किसी मर्द का इंतज़ार नहीं, पर जो हमेशा ठीक मेरे जैसे किसी एक को ही खोजती रहती थीं।

उस शाम मैं होटल लौटा, बारहवीं गली पर — हालाँकि वह सचमुच कोई शहरी पता नहीं था, वह तो बस मैं था, रेस्तराँ से लेकर अपनी सोने की जगह तक के ब्लॉक गिनता हुआ, ताकि रास्ता न भटक जाऊँ।

रात का खाना बरसों से वही था — मेन पर अपने लॉबस्टर वाले लिंगुइने मैं कभी नहीं छोड़ता, वह वाला जो अंग्रेज़ी बोलता था, जबकि मेरा अफ़्रीकांस बोलता था और हमेशा समझ में आने लायक नहीं होता था, अफ़्रीकी क़बीलाई ज़बानों और डच का मिश्रण।

शराब को लेकर कोई शक नहीं था: हर भोजन के साथ एक गिलास, हमेशा, लाल, इतालवी — तालू और कुछ माँगता ही नहीं था। पर जब जेब ताल तय करने लगती, तो उसे छोड़कर नल के पानी पर आ जाने के सिवा कोई चारा नहीं था।

मेरा कमरा सुंदर था, सुविधाओं से भरा हुआ जो बंद ही रहीं — एक स्विमिंग पूल, एक गोल्फ़ कोर्स, एक सॉना, एक मालिश कक्ष, दो सुनहरे बालों वाली औरतें और दो काली औरतें और एक लाल बालों वाली, एक शीत-उद्यान — सब कुछ प्रवेश द्वार पर टँगी एक ही तस्वीर में पहेली की तरह समेटा हुआ।

और फिर वह अकेली चारपाई, जिस पर करवट बदलो तो कमानियाँ चीख उठती थीं, एक लाल आरामकुर्सी छेदों से भरी, एक छोटी मेज़ — सब क़ीमत में शामिल, कुछ डॉलर प्रति रात, अंदर जाने से पहले चुकाए हुए।

बाथरूम सबसे ख़ास चीज़ थी — इतिहास का पहला सच्चा पुकार-कर-आने वाला बाथरूम। बस चिल्लाना होता था: ख़ाली है? अगर दस सेकंड में कोई जवाब न आए, तो वह तुम्हारा — गलियारे में एक जगह, बीस कमरों के लिए, स्त्री-पुरुष साझा, ताकि कोई असमानता न पैदा हो।

रात के 10:34 बजे थे। मैं थका हुआ था, सोने ही वाला था, कि दरवाज़े पर दस्तक सुनी। मुझे लगा किसी ने ग़लत कमरा समझ लिया है, और मैं उठा नहीं। फिर एक और दस्तक हुई, और घड़ी के हिसाब से रात के 2:46 बज रहे थे — वक़्त अपनी परवाह किए बिना बढ़ता रहा, बिना किसी को ख़बर हुए।

मैं दरवाज़ा खोलने उठा और वहाँ कोई नहीं मिला। जब मैं बिस्तर की ओर मुड़ा, तो कोई मेरी लाल आरामकुर्सी पर बैठा था। फ्रेगा, उसने कहा, आख़िरकार मैंने तुम्हें ढूँढ़ ही लिया।

उसकी छवि धुँधली थी, मानवीय नहीं, किसी प्रतिबिंब जैसी। मैंने समझने की कोशिश की कि कहीं यह किसी होलोग्राम के भीतर की कोई चालाकी तो नहीं। इसकी पुष्टि करने वाला मुझे कुछ नहीं मिला।

देखने, या यह पता लगाने की कोशिश करने से कोई फ़ायदा नहीं कि मैं कौन हूँ — मैं तुम्हारी मेहनत बचा देता हूँ। मैं वही भूत हूँ जिससे तुम हस्तरेखा पढ़ने वाली के यहाँ मिले थे, और मैं Gillette गाथा के पंद्रहवें खंड का अंत जानने आया हूँ। बदले में मैं तुम्हें तुम्हारी GILLETTENARRATIVE के लिए दो राज़ दूँगा।

अगर मैंने यह क़िस्सा किसी को सुनाया होता, तो वे मुझे उसी वक़्त बोस्टन के अस्पताल में भर्ती करा देते। इसलिए मैंने ध्यान रखा कि इसे किसी जीव को न बताऊँ।

पंद्रहवीं किताब का आख़िरी हिस्सा यह है:

दो क्यूबाई औरतें, माँ और बेटी, जवान और सुंदर, दोनों ने — अलग-अलग समय पर, अलग-अलग तरीक़ों से — मेरे साथ अकेले रहने और बात करने के लिए जगह निकाली थी, और दोनों उससे हिली हुई निकली थीं। दोनों एक ही चीज़ चाहती थीं: मुझसे शादी करना।

मैंने कभी शादी की अँगूठी नहीं पहनी, अपनी उँगलियों के एक जन्मजात दोष के कारण, जिसे 1993 में मेरी शादी से पहले प्रमाणित किया गया था — और मेरी पत्नी ने मेरा यह ऐब भी क़बूल कर लिया था।

एक सुबह मैंने क्यूबा छोड़ दिया। बिना किसी आरक्षण के इटली की पहली उड़ान पकड़ी — जो उन जगहों को जानता है वह मुश्किल का अंदाज़ा लगा सकता है, पर यह कभी नहीं कि मैंने वह किया कैसे — और औरतों से, एक-एक करके, पूरे भरोसे में कहा कि मैं जल्द लौटूँगा, कि मैं उनसे शादी करूँगा। ऐसा कभी नहीं हुआ।

मैंने सोचा कि एक दिन वे मुझे और मेरे वादों को भूल जाएँगी। पर नहीं: उन्होंने ओरुला के अफ़्रीकी धर्म का एक आइफ़ा नियुक्त करने का फ़ैसला किया, ताकि बुराई का आह्वान कर मुझ पर मौत का अभिशाप डाला जाए — वह वाला जिसमें पैसे वापस नहीं मिलते।

और वह काम कर रहा था। मुझे आनन-फ़ानन गहन चिकित्सा कक्ष में पहुँचाया गया, मौत की ड्योढ़ी में, जब पाया गया कि हीमोग्लोबिन पाँच प्रतिशत से नीचे है, फेफड़ों में पानी है, साँस लेने में दिक़्क़त है — और रिपोर्ट ने मुझे ज़्यादा से ज़्यादा छत्तीस घंटे दिए।

अंतिम-संस्कार वाली कंपनी भी आ गई, और उसने ताबूत बिस्तर के बगल में रख दिया। मैं यह सब देख रहा था। मुझमें एक साँस बाहर धकेलने की ताक़त तक नहीं बची थी। तब भी लिखने का ख़याल मुझे कभी नहीं आया।

सब कुछ तैयार लग रहा था। सब कुछ काले जादू के अनुष्ठान के मुताबिक़ चल रहा था, कि तैंतीस घंटे बाद मैं बिस्तर से उठा, सारी नलियाँ खींच निकालीं, और पाजामे में ही वार्ड से बाहर निकलकर घर चल दिया।

मैं पाँच किलोमीटर पैदल चला, घंटी बजाई, और मेरी पत्नी बेहोश हो गई। मैंने उससे कहा पास्ता ए फ़ाजोली बनाओ, मुझे भूख लगी है। बीस मिनट बाद कारबिन्येरी ने घंटी बजाई, अस्पताल की सूचना पर।

वे मुर्दे को खोज रहे थे, और जब मैंने कहा कि वह मैं ही हूँ, तो उन्होंने अपने अंडकोष पकड़े और चले गए।

वह पल आया कि मैं अपने मेहमान से कहूँ कि अंत का यही हिस्सा है, और वक़्त देखते हुए मैं उससे जाने को कह रहा हूँ। वह मुस्कुराया: क्या तुम्हें यह जानने की उत्सुकता नहीं कि मुझे तुम्हें क्या बताना है?

मैंने कहा नहीं — क्योंकि उत्सुकता एक ज़नाना चीज़ है। औरतें उसे दूसरी औरतों से जीतने के लिए पहनती हैं। और मेरी माँ ने मुझे हमेशा एक बात कही थी: औरत के दिमाग़ के भीतर मर्द बने रहो।

फेर्दिनान्दो

© 2026 Ferdinando Frega — सर्वाधिकार सुरक्षित
Gillette Audio — संयुक्त राज्य अमेरिका में कॉपीराइट पंजीकरण प्रक्रियाधीन